एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पंचगव्य- किसानों के लिए एक वरदान

(*अक्षिका भावरियाँ[1], भावना सिंह राठौड़[1] एवं जितेन्द्र कुमार[2])

[1]विद्यावाचस्पति छात्रा, शस्य विज्ञान विभाग, स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविधालय, बीकानेर

[2]विद्यावाचस्पति छात्र, प्रसार शिक्षा विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

* akshikabhawariya0101@gmail.com

हरित क्रांति के समय देश में कृषि के क्षेत्र में प्रगति काफी तेजी से हुई | हालाँकि इस दौरान कृषि कार्यों में रासायनिक खादों के इस्तेमाल से खाद्यान्नों के उत्पादन में भारी मात्रा में वृद्धि हुई | यहाँ तक कि रासायनिक खादों के इस्तेमाल से फसलों को आवश्यकता के अनुसार उपयोगी तत्वों को पूर्ति होनें लगी परन्तु भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट होनें लगी, जो हमारे भविष्य के लिए बड़ा खतरा बनता जा रहा है | आज से कई दशक पूर्व फसलों के उत्पादन में किसानों द्वारा सिर्फ जैविक खाद का ही इस्तेमाल किया जाता था | जिससे उत्पादन के साथ-साथ भूमि की उर्वरा शक्ति में इजाफा भी होता था |

प्राचीन काल में सभी किसान अपनें खेतों और फसलों से बेहतर उत्पादन प्राप्त करनें के लिए जैविक खाद का उपयोग करते थे | वह फसलों की गुणवत्ता और पौधों को कीट, पतंगों आदि से बचानें के लिए आयुर्वेदिक नुस्खों का इस्तेमाल करते थे, इन्ही में एक पंचगव्य है | प्राचीन समय में पंचगव्य का उपयोग खेत की उर्वरकता शक्ति बढ़ाने तथा पौधों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाता था। पंचगव्य एक बहुत ही प्रभावकारी जैविक खाद है, जो पौधों की वृद्धि एवं विकास में सहायता करनें के साथ ही प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ानें का कार्य करता है | पंचगव्य का निर्माण देसी गाय के पांच उत्पादों गौमूत्र, गोबर, दूध, दही, और घी के मिश्रण से होता है | दरअसल गाय को 'माता' का नाम ऐसे ही नही दे दिया गया है, गाय से उत्पन्न होनें वाली प्रत्येक चीज एक औषधि है | सबसे खास बात यह है, कि गाय के उत्पादों में पौधों के लिए जरुरत के हिसाब से सभी चीजे और पोषक तत्व उपलब्ध होते है | पंचगव्य प्रकृति द्वारा प्रदान की गयी चीजो से बनायीं गयी एक ऐसी औषधि है, जो खेत में उग्रें वाले पौधौ के आलावा भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ानें का कार्य करती है |

पंचगव्य के लाभ

- भूमि में पंचगव्य का इस्तेमाल करनें से खेत में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होती है |
- खेत में पंचगव्य का इस्तेमाल करनें से खेत की उर्वरा अर्थात उपजाऊ शक्ति में सुधार होता है |
- इसके निरंतर उपयोग से भूमि में हवा व नमी का संतुलन बना रहता है |
- फसलों में विभिन्न प्रकार के होनें वाले रोग और कीट का प्रभाव काफी कम हो जाता है |
- रासायनिक खादों की अपेक्षा यह काफी सरल और आसानी से प्राप्त किया जा सकता है |

- पंचगव्य खेत में जल की आवश्यकता को 25 से 30 प्रतिशत तक कम कर देता है, जिसके कारण सूखे की स्थिति में पौधा जीवित अवस्था में बना रहता है |
- पंचगव्य के इस्तेमाल से फसलों के उत्पादन में वृद्धि के साथ ही यह पशुओं और मानव जीवन के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

पंचगव्य बनानें हेतु सामग्री

फसलों के बेहतर उत्पादन और मानव जीवन के लिए पंचगव्य अमृत के समान है और सबसे खास बात यह है, कि आप इसे अपनें घर पर ही तैयार कर सकते है | यदि आप इसे बनाना चाहते है, तो इसके लिए कुछ सामग्री की आवश्यकता होगी जो इस प्रकार है-

क्रं०स०	सामग्री का नाम	मात्रा
1.	देशी गाय का फ्रेश गोबर	5 किलोग्राम
2.	देशी गाय का ताजा मूत्र	3 लीटर
3.	देशी गाय का ताजा कच्चा दूध	2 लीटर
4.	देशी गाय का दही	2 लीटर
5.	देशी गाय का घी	500 ग्राम
6.	गुड़	500 ग्राम
7.	पके हुए केले	1 दर्जन (12)

पंचगव्य बनाने की विधि

पंचगव्य बनानें के लिए सबसे पहले 5 किलोग्राम गोबर और डेढ़ लीटर (1.5L) गोमूत्र में 250 ग्राम (250 gram) देशी घी को मिलाकर प्लास्टिक या मिट्टी से बनें हुए किसी मटके में डाल दें। इस मिश्रण को अगले 3 दिनों तक बीच-बीच में हाथ से हिलाते रहे, और चौथे दिन मिश्रण को अच्छी तरह से मिलाकर मटके को किसी ढक्कन से बंद कर 15 दिनों के लिए किसी छायादार स्थान पर रख दे | अब आपको 15 दिनों तक किसी लकड़ी से रोजाना सुबह और शाम के समय इस मिश्रण को घोलना होता है | इस प्रकार लगभग 18 दिनों के बाद पंचगव्य उपयोग के लिए बनकर तैयार हो जायेगा |

इसके पश्चात यह खमीर का रूप ले लेगा और इस मिश्रण से खुशबू आने लगे तो आप समझ जाएँ कि पंचगव्य उपयोग के लिए पूरी तरह से तैयार हो गया है | इसके आलावा यदि मिश्रण से खटास भरी बदबू आने लगे, तो ऐसी स्थित में आपको मिश्रण को हिलाने की प्रक्रिया एक सप्ताह अर्थात 7 दिनों के लिए और बढ़ा दें | इस प्रकार आपका पंचगव्य तैयार हो जाता है, अब आप इसे लगभग दस लीटर जल में 250 ग्राम पंचगव्य मिलाकर किसी भी फसल के लिए उपयोग कर सकते है| सबसे ख़ास बात यह है, कि इसे एक बार बनानें के बाद लगभग 6 माह तक इस्तेमाल कर सकते है | यदि हम इसे बनानें में लागत की बात करे, तो इसे बनानें में लागत लगभग 70 रु. प्रति लीटर आती है।

पंचगव्य का उपयोग कैसे करे

पंचगव्य का प्रयोग आप विभिन्न प्रकार की फसलों जैसे गेहूँ, मक्का, बाजरा, धान, मूंग, उर्द, कपास, सरसों, मिर्च, टमाटर, बैंगन, प्याज, मूली, गाजर, आलू, हल्दी, अदरक, लहसुन, हरी सब्जियाँ, आदि में प्रत्येक 15 दिनों के अंतराल में कर सकते है | यहाँ तक कि आप इसे दस लीटर जल में 250 ग्राम पंचगव्य मिलाकर किसी भी फसल में इस्तेमाल कर सकते है | यदि फसल के काटनें का समय नजदीक है, तो आप इसे फसल कटाई से 20 दिन पहले इसका उपयोग कर सकते है |